रविवार 7 जून, 2026

विषय — ईश्वर ही एकमात्र कारण और निर्माता है

स्वर्ण पाठ: यूहन्ना 1: 1

"सेआदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था।"

उत्तरदायी अध्ययन: भजन संहिता **24: 1-5, 7-10**

1 पृथ्वी और जो कुछ उस में है यहोवा ही का है; जगत और उस में निवास करने वाले भी।
2 क्योंकि उसी ने उसकी नींव समुद्रों के ऊपर दृढ़ करके रखी, और महानदों के ऊपर स्थिर किया है॥
3 यहोवा के पर्वत पर कौन चढ़ सकता है? और उसके पवित्र स्थान में कौन खड़ा हो सकता है?
4 जिसके काम निर्दोष और हृदय शुद्ध है, जिसने अपने मन को व्यर्थ बात की ओर नहीं लगाया, और न कपट से शपथ खाई है।
5 वह यहोवा की ओर से आशीष पाएगा, और अपने उद्धार करने वाले परमेश्वर की ओर से धर्मी ठहरेगा।
7 हे फाटकों, अपने सिर ऊंचे करो। हे सनातन के द्वारों, ऊंचे हो जाओ। क्योंकि प्रतापी राजा प्रवेश करेगा।
8 वह प्रतापी राजा कौन है? परमेश्वर जो सामर्थी और पराक्रमी है, परमेश्वर जो युद्ध में पराक्रमी है!
9 हे फाटकों, अपने सिर ऊंचे करो हे सनातन के द्वारों तुम भी खुल जाओ! क्योंकि प्रतापी राजा प्रवेश करेगा!
10 वह प्रतापी राजा कौन है? सेनाओं का यहोवा, वही प्रतापी राजा है॥

पाठ उपदेश

बाइबल

1. यशायाह **40: 10 (से :)**

10 देखो, प्रभु यहोवा सामर्थ दिखाता हुआ रहा है, वह अपने भुजबल से प्रभुता करेगा;

2. निर्गमन **15: 1 (से :), 4 (से :), 7 (से :), 8 से *2nd* ,), 9, 10 (से :), 13, 22 (से *1st* ,)**

1 उन्होंने कहा, मैं यहोवा का गीत गाऊंगा, क्योंकि वह महाप्रतापी ठहरा है; घोड़ों समेत सवारों को उसने समुद्र में डाल दिया है॥
4 फिरौन के रथों और सेना को उसने समुद्र में डाल दिया; और उसके उत्तम से उत्तम रथी लाल समुद्र में डूब गए॥
7 और तू अपने विरोधियों को अपने महाप्रताप से गिरा देता है; तू अपना कोप भड़काता, और वे भूसे की नाईं भस्म हो जाते हैं॥

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

8 और तेरे नयनोंकी सांस से जल एकत्र हो गया, धाराएं ढेर की नाईं थम गईं; समुद्र के मध्य में गहिरा जल जम गया॥
9 शत्रु ने कहा था, मैं पीछा करूंगा, मैं जा पकडूंगा, मैं लूट के माल को बांट लूंगा, उन से मेरा जी भर जाएगा। मैं अपनी तलवार खींचते ही अपने हाथ से उन को नाश कर डालूंगा॥
10 तू ने अपने श्वास का पवन चलाया, तब समुद्र ने उन को ढांप लिया; वे महाजलराशि में सीसे की नाईं डूब गए॥
13 अपनी करूणा से तू ने अपनी छुड़ाई हुई प्रजा की अगुवाई की है, अपने बल से तू उसे अपने पवित्र निवासस्थान को ले चला है॥
22 तब मूसा इस्राएलियों को लाल समुद्र से आगे ले गया,

3. निर्गमन 20: 2

2 कि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा हूं, जो तुझे दासत्व के घर अर्थात मिस्र देश से निकाल लाया है॥

4. निर्गमन 17: 1-7

1 फिर इस्राएलियों की सारी मण्डली सीन नाम जंगल से निकल चली, और यहोवा के आज्ञानुसार कूच करके रपीदीम में अपने डेरे खड़े किए; और वहां उन लोगों को पीने का पानी न मिला।
2 इसलिये वे मूसा से वादविवाद करके कहने लगे, कि हमें पीने का पानी दे। मूसा ने उन से कहा, तुम मुझ से क्यों वादविवाद करते हो? और यहोवा की परीक्षा क्यों करते हो?
3 फिर वहां लोगों को पानी की प्यास लगी तब वे यह कहकर मूसा पर बुड़बुड़ाने लगे, कि तू हमें लड़के बालोंऔर पशुओं समेत प्यासों मार डालने के लिये मिस्र से क्यों ले आया है?
4 तब मूसा ने यहोवा की दोहाई दी, और कहा, इन लोगों से मैं क्या करूं? ये सब मुझे पत्थरवाह करने को तैयार हैं।
5 यहोवा ने मूसा से कहा, इस्राएल के वृद्ध लोगों में से कुछ को अपने साथ ले ले; और जिस लाठी से तू ने नील नदी पर मारा था, उसे अपने हाथ में ले कर लोगों के आगे बढ़ चल।
6 देख मैं तेरे आगे चलकर होरेब पहाड़ की एक चट्टान पर खड़ा रहूंगा; और तू उस चट्टान पर मारना, तब उस में से पानी निकलेगा जिससे ये लोग पीएं। तब मूसा ने इस्राएल के वृद्ध लोगों के देखते वैसा ही किया।
7 और मूसा ने उस स्थान का नाम मस्सा और मरीबा रखा, क्योंकि इस्राएलियों ने वहां वादविवाद किया था, और यहोवा की परीक्षा यह कहकर की, कि क्या यहोवा हमारे बीच है वा नहीं?

5. निर्गमन 20: 3

3 तू मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर करके न मानना॥

6. लूका 4: 14 (से :)

14 फिर यीशु आत्मा की सामर्थ से भरा हुआ गलील को लौटा,

7. मत्ती 4: 24

24 और सारे सूरिया में उसका यश फैल गया; और लोग सब बीमारों को, जो नाना प्रकार की बीमारियों और दुखों में जकड़े हुए थे, और जिन में दुष्टात्माएं थीं और मिर्गी वालों और झोले के मारे हुओं को उसके पास लाए और उस ने उन्हें चंगा किया।

8. मत्ती 8: 2-4

2 और देखो, एक कोढ़ी ने पास आकर उसे प्रणाम किया और कहा; कि हे प्रभु यदि तू चाहे, तो मुझे शुद्ध कर सकता है।
3 यीशु ने हाथ बढ़ाकर उसे छूआ, और कहा, मैं चाहता हूं, तू शुद्ध हो जा और वह तुरन्त को ढ़ से शुद्ध हो गया।
4 यीशु ने उस से कहा; देख, किसी से न कहना परन्तु जाकर अपने आप को याजक को दिखला और जो चढ़ावा मूसा ने ठहराया है उसे चढ़ा, ताकि उन के लिये गवाही हो।

9. मत्ती 17: 1-9, 14-20

1 छ: दिन के बाद यीशु ने पतरस और याकूब और उसके भाई यूहन्ना को साथ लिया, और उन्हें एकान्त में किसी ऊंचे पहाड़ पर ले गया।
2 और उनके साम्हने उसका रूपान्तर हुआ और उसका मुंह सूर्य की नाईं चमका और उसका वस्त्र ज्योति की नाईं उजला हो गया।
3 और देखो, मूसा और एलिय्याह उसके साथ बातें करते हुए उन्हें दिखाई दिए।
4 इस पर पतरस ने यीशु से कहा, हे प्रभु, हमारा यहां रहना अच्छा है; इच्छा हो तो यहां तीन मण्डप बनाऊं; एक तेरे लिये, एक मूसा के लिये, और एक एलिय्याह के लिये।
5 वह बोल ही रहा था, कि देखो, एक उजले बादल ने उन्हें छा लिया, और देखो; उस बादल में से यह शब्द निकला, कि यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिस से मैं प्रसन्न हूं: इस की सुनो।
6 चेले यह सुनकर मुंह के बल गिर गए और अत्यन्त डर गए।
7 यीशु ने पास आकर उन्हें छूआ, और कहा, उठो; डरो मत।
8 तब उन्होंने अपनी आंखे उठाकर यीशु को छोड़ और किसी को न देखा।
9 जब वे पहाड़ से उतर रहे थे तब यीशु ने उन्हें यह आज्ञा दी; कि जब तक मनुष्य का पुत्र मरे हुओं में से न जी उठे तब तक जो कुछ तुम ने देखा है किसी से न कहना।
14 जब वे भीड़ के पास पहुंचे, तो एक मनुष्य उसके पास आया, और घुटने टेक कर कहने लगा।
15 हे प्रभु, मेरे पुत्र पर दया कर; क्योंकि उस को मिर्गी आती है: और वह बहुत दुख उठाता है; और बार बार आग में और बार बार पानी में गिर पड़ता है।
16 और मैं उस को तेरे चेलों के पास लाया था, पर वे उसे अच्छा नहीं कर सके।
17 यीशु ने उत्तर दिया, कि हे अविश्वासी और हठीले लोगों मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूंगा? कब तक तुम्हारी सहूंगा? उसे यहां मेरे पास लाओ।
18 तब यीशु ने उसे घुड़का, और दुष्टात्मा उस में से निकला; और लड़का उसी घड़ी अच्छा हो गया।
19 तब चेलों ने एकान्त में यीशु के पास आकर कहा; हम इसे क्यों नहीं निकाल सके?

[20] उस ने उन से कहा, अपने विश्वास की घटी के कारण: क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूं, यदि तुम्हारा विश्वास राई के दाने के बराबर भी हो, तो इस पहाड़ से कह स को गे, कि यहां से सरककर वहां चला जा, तो वह चला जाएगा; और कोई बात तुम्हारे लिये अन्होनी न होगी।

10. यूहन्ना **14: 12**

[12] मैं तुम से सच सच कहता हूं, कि जो मुझ पर विश्वास रखता है, ये काम जो मैं करता हूं वह भी करेगा, वरन इन से भी बड़े काम करेगा, क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूं।

11. यूहन्ना **14: 10 (**पिता जो**)**

[10] ... परन्तु पिता मुझ में रहकर अपने काम करता है।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 502: 27-5

रचनात्मक सिद्धांत - जीवन, सत्य और प्रेम - ईश्वर है। ब्रह्मांड ईश्वर को दर्शाता है। लेकिन एक रचनाकार और एक रचना है। इस रचना में आध्यात्मिक विचारों और उनकी पहचानों का खुलासा होता है, जो अनंत मन में समाहित हैं और हमेशा के लिए परिलक्षित होते हैं। ये विचार अनंत से लेकर अनंत तक हैं, और उच्चतम विचार ईश्वर के पुत्र और पुत्रियाँ हैं।

2. 280: 17-19

मूसा ने यहोवा की दस आज्ञाओं में से पहली आज्ञा यह घोषित की*:* " तू मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर करके न मानना*!*"

3. 255: 6-15

सृष्टि के बारे में इंसानों की मनगढ़ंत सिद्धांत, जिन्हें पुराने समय में उच्च आलोचना माना जाता था, रोम और यूनान के पढ़े-लिखे विद्वानों से निकली थीं, लेकिन वे दिव्य मन से सृष्टि के बारे में सही विचारों का कोई आधार नहीं देती थीं।

इंसान ने अपनी आँखों से वादा किया है कि वह इंसानी सोच से भगवान को छोटा दिखाएगा। भौतिक समझ के साथ मिलकर, इंसान सभी चीज़ों के बारे में सीमित दृष्टिकोण रखते हैं। किसी भी इंसान को यह नहीं मानना चाहिए कि ईश्वर साकार है या भौतिक।

4. 501: 1-13

पवित्रशास्त्र की वैज्ञानिक व्याख्या सही मायने में पुराने नियम के आरंभ से शुरू होती है, मुख्यतः इसलिए क्योंकि वचन का आध्यात्मिक आयात, अपनी आरंभिक अभिव्यक्तियों में, अक्सर तात्कालिक संदर्भ में इतना दब जाता है कि उसे स्पष्टीकरण की आवश्यकता होती है; जबकि नया नियम की कहानियाँ ज़्यादा साफ़ हैं और दिल के ज़्यादा करीब हैं। इंसानी ज़िंदगी की गरीबी दिखाते हुए, लेकिन इंसानी ज़रूरतों और दुखों की भरपाई आध्यात्मिक फ़ायदे से करते हुए, यीशु उन्हें रोशन करते हैं।

सत्य का अवतार, आश्चर्य और महिमा का वह विस्तार जिसे फ़रिश्ते सिर्फ़ फुसफुसा सकते थे और जिसे ईश्वर ने प्रकाश और तालमेल से दिखाया, हमेशा मौजूद प्रेम के साथ मेल खाता है।

5. 135: 26-32

ईसाई धर्म, जैसा कि यीशु ने सिखाया था, न तो कोई पंथ था, न ही समारोहों की एक प्रणाली, न ही अनुष्ठान करने वाले यहोवा का कोई विशेष उपहार; लेकिन यह दैवीय प्रेम का प्रदर्शन था जो त्रुटि को दूर करता था और बीमारों को ठीक करता था, न केवल ईसा मसीह या सत्य के नाम पर, बल्कि सत्य के प्रदर्शन में, जैसा कि दैवीय प्रकाश के चक्रों में होना चाहिए।

6. 6: 29-7

यह कई लोगों द्वारा माना जाता है कि एक निश्चित मजिस्ट्रेट, जो यीशु के समय में रहते थे, ने यह कथन दिया: "उसकी फटकार भयभीत है।" हमारे मास्टर की कड़वी भाषा इस विवरण की पुष्टि करती है।

गलती के लिए उसे जो एकमात्र सजा थी, वह थी, "हे शैतान, मेरे साम्हने से दूर हो।" जीसस का तिरस्कार तेज और गहन था, इसका मजबूत प्रमाण उनके स्वयं के शब्दों में मिलता है, — इस तरह के जबरन बोलने की आवश्यकता को दिखाते हुए, जब उसने शैतानों को बाहर निकाला और बीमार और पापी को चंगा किया। त्रुटि का निवारण उसके झूठे दावों की भौतिक भावना से वंचित करता है।

7. 133: 8-10, 13-15

मिस्र में, यह मन ही था जिसने इस्राएलियों को मुसीबतों पर विश्वास करने से बचाया। जंगल में, चट्टान से नदियाँ बहती थीं, और आसमान से मन्ना गिरता था... देश की खुशहाली में, हिब्रू लोगों की सफलताओं के साथ चमत्कार भी हुए; लेकिन जब वे सच्चे विचार से भटक गए, तो उनका हौसला टूटना शुरू हो गया।

8. 469: 13 (यह)-20

गलतियों को खत्म करने वाला यह बड़ा सच है कि भगवान, अच्छा, ही एकमात्र मन है, और अनंत मन का काल्पनिक उल्टा – जिसे शैतान या बुरा कहा जाता है – मन नहीं है, सच नहीं है, बल्कि गलती है, जिसमें न तो समझ है और न ही सच्चाई। सिर्फ़ एक ही मन हो सकता है, क्योंकि सिर्फ़ एक ही भगवान है; और अगर इंसान किसी दूसरे मन का दावा न करें और किसी दूसरे को न मानें, तो पाप का पता नहीं चलेगा।

9. 508: 5-8

किसी विचार, बीज या फूल की एकमात्र बुद्धि या तत्व ईश्वर है, जो उसे बनाने वाला है। मन ही सबकी आत्मा है। मन ही जीवन, सत्य और प्रेम है जो सब पर राज करता है।

10. 135: 11 केवल, 15-20

जो शक्ति पाप को ठीक करती है, वही बीमारी को भी ठीक करती है...जब मसीह ने गूंगेपन के शैतान को बाहर निकाला, "तो ऐसा हुआ कि जब शैतान निकल गया, तो गूंगे बोलने लगे।" आज यहूदियों के गुनाह को दोहराने का खतरा है, क्योंकि वे इस्राएल के पवित्र को सीमित कर रहे हैं और पूछ रहे हैं: "क्या परमेश्वर जंगल में खाने की मेज़ दे सकता है?" परमेश्वर क्या नहीं कर सकता?

11. 13: 28-10

भौतिक प्रतिरोध पर आध्यात्मिक शक्ति की श्रेष्ठता में विश्वास करने का दिव्य अधिकार है।

एक चमत्कार भगवान के नियम को पूरा करता है, लेकिन उस कानून का उल्लंघन नहीं करता है। वर्तमान में यह तथ्य चमत्कार से अधिक रहस्यमय प्रतीत होता है। भजनहार ने गाया: “हे समुद्र, तुझे क्या हुआ, कि तू भागा? और हे यर्दन तुझे क्या हुआ, कि तू उलटी बही? हे पहाड़ों तुम्हें क्या हुआ, कि तुम भेड़ों की नाईं, और हे पहाड़ियों तुम्हें क्या हुआ, कि तुम भेड़- बकरियों के बच्चों की नाईं उछलीं? हे पृथ्वी प्रभु के साम्हने, हां याकूब के परमेश्वर के साम्हने थरथरा” यह चमत्कार किसी विकार का परिचय नहीं देता है, लेकिन मौलिक आदेश को प्रकट करता है, भगवान के अपरिवर्तनीय कानून के विज्ञान की स्थापना। आध्यात्मिक विकास अकेले ईश्वरीय शक्ति के व्यायाम के योग्य है।

12. 151: 23-30

जिस दिव्य मन ने मनुष्य को बनाया वह उसकी अपनी छवि और समानता को बनाए रखता है। मानव मन ईश्वर का विरोध करता है और इसे दूर किया जाना चाहिए, जैसा कि सेंट पॉल घोषित करते हैं। वह सब जो वास्तव में मौजूद है, वह है दिव्य मन और उसका विचार, और इस मन में संपूर्ण प्राणी सामंजस्यपूर्ण और शाश्वत पाया जाता है। सीधे और संकीर्ण तरीके से इस तथ्य को देखना और स्वीकार करना है, इस शक्ति से उपजें, और सच्चाई की अग्रणी का पालन करें।

13. 290: 1-2

जीवन हमेशा रहने वाला 'मैं' है, वह अस्तित्व जो था, है और रहेगा, जिसे कोई मिटा नहीं सकता।

14. 566: 1-9

चूंकि लाल सागर के माध्यम से इज़राइल के बच्चों को विजयी रूप से निर्देशित किया गया था, इसलिए मानव भय के अंधेरे और बहते ज्वार, — क्योंकि वे जंगल से होकर निकले थे, जो मानवीय आशाओं के महान रेगिस्तान से थके हुए थे, और वादा किए गए आनन्द की आशा करते थे,— इसलिए आध्यात्मिक विचार आत्मा से अस्तित्व की भौतिक भावना से लेकर आत्मा तक, भगवान से प्रेम करने वाले उनके लिए तैयार किए गए गौरव तक, आत्मा से उनके मार्ग में सभी सही इच्छाओं का मार्गदर्शन करेगा।

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6